डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 दिसम्बर 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-आठवां | दिसम्बर-2009 | मासिक पत्रिका

5 **निर्मल**
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
बहादुरगढ़ (हरियाणा)

23 **अमृत वेला**
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा
भजन पर बिठाने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

25 **निन्दा**
परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
77 आर.बी. आश्रम (राजस्थान)

30 **प्रेम-विरह**
परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 9950 55 66 71 (राजस्थान) व 9871 50 19 99 (दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 09928 92 53 04, 09667 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह (93)
सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

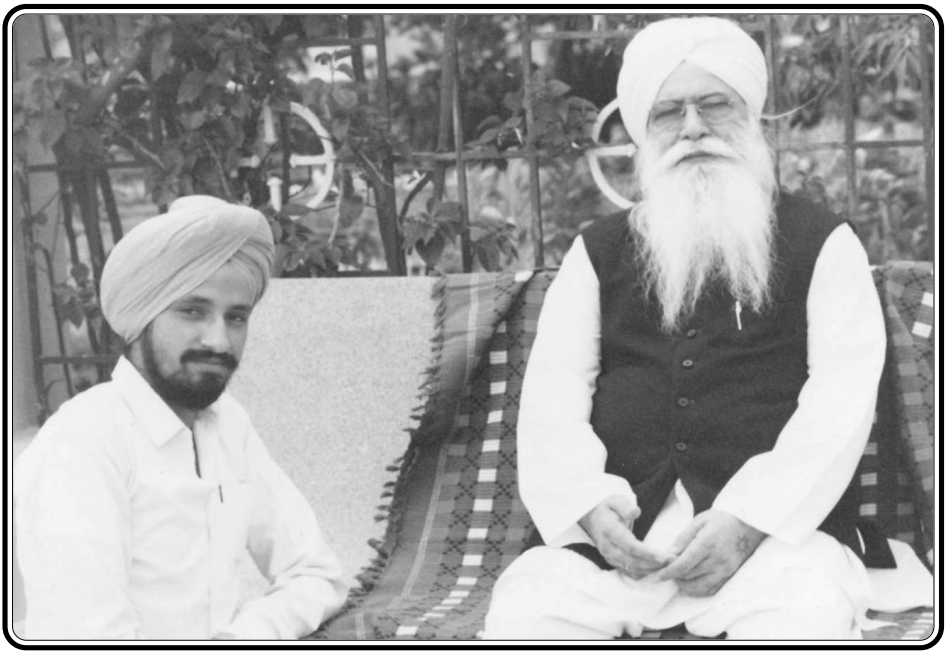

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से *अजायब बानी* मासिक पत्रिका का कार्य सम्पन्न हो रहा है। बाबा जी ने मार्च - 1988 में कबीर साहब की बानी पर बहुत महत्त्वपूर्ण सतसंग किए थे।

संगत के फायदे के लिए उपरोक्त सतसंगों को जनवरी - 2010 से इस मासिक पत्रिका में छापा जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों से अनुरोध है कि समयानुसार अपनी पत्रिका प्राप्त करें।

जो प्रेमी इस पत्रिका को डाक द्वारा प्राप्त कर रहे हैं उनके चरणों में निवेदन है कि वे समयानुसार सूचित करते रहें। पत्र-व्यवहार करते समय कृपया अपना क्रमांक अवश्य लिखें (आपका क्रमांक लिफाफे पर आपके नाम के साथ लिखा होता है)

आपके सुझावों का स्वागत करते हुए सदैव आपसे सहयोग की आशा करते हैं। आपको नए साल की शुभकामनाएं।

आपका अपना

प्रेम प्रकाश छाबड़ा (सम्पादक)
1027, अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान)
फोन 09950 55 66 71 (राजस्थान) व 09871 50 19 99 (दिल्ली)

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

निर्मल

गुरु नानकदेव जी की बानी

बहादुरगढ़ (हरियाणा)

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया, अपना यश करने का मौका दिया। हम सभी को दिल से यह अरदास करनी चाहिए कि हे परमात्मा! तू हमें **निर्मल** बुद्धि दे ताकि हम सन्तों की तालीम को समझ सकें कि उन महापुरुषों का क्या उपदेश है, क्या संदेश है?

संसार में जितने भी महात्मा आए हैं या आएंगे हर महात्मा का एक ही संदेश होता है। तीरअदांज चाहे कितने भी हों सबका एक ही निशान होता है। हिन्दुस्तान की आम कहावत है:

सौ स्याणयां इको मत, मूरखां आपो आपणी।

महात्मा कहते हैं कि परमात्मा एक है। ऐसा नहीं कि हिन्दुस्तानियों का परमात्मा और है अमेरिकन या अफ्रीकन लोगों का परमात्मा और है! चाहे कोई महात्मा पाँच सौ साल पहले हुआ! चाहे पाँच हजार साल पहले हुआ! चाहे आज से चार युग पहले हुआ! हर युग में महात्मा यही बताते आए हैं कि परमात्मा एक है। वह सबका दाता है, बादशाह है और उससे मिलने का साधन भी एक ही है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैं चारों युगों में आया हूँ। सतयुग में मेरा नाम सतसुकृत, त्रेता में करूणामय, द्वापर में मनिन्द्र और कलयुग में कबीर पड़ा।'' हमें कबीर साहब का *अनुराग सागर* पढ़ने से पता लगता है कि आपने उन युगों में किस-किस को 'नाम' दिया।

सारी कायनात एक ही तरीके से जन्म लेती है। बचपन, जवानी, बुढ़ापा और मौत हर मुल्क के आदमी को एक ही तरीके से आते हैं। परमात्मा जिसे भी मिला अंदर से ही मिला है। कबीर साहब कहते हैं:

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें जाग सके तो जाग।

जिस तरह तिल के अंदर तेल है पत्थर के अंदर अग्नि है दूध के अंदर घी है इसी तरह वह प्यारा प्रीतम हम सबके अंदर है; वह सबकी परवरिश करता है। सिद्धों ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''संसार समुद्र से तरने का क्या साधन है?'' आपने जवाब दियाः

सुरत शब्द भव सागर तरिए, नानक नाम बखाने।

जिस तरह मुरगावी जल के अंदर रहती और खाती-पीती है वह जब उड़ती है तो खुष्क परों से उड़ जाती है। इसी तरह 'सुरत-शब्द' से भाव आत्मा का परमात्मा से जोड़ करना है। सुरत भी अंदर है और **निर्मल** 'शब्द' भी अंदर है लेकिन हम उसे अपने आप नहीं जोड़ सकते।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है जिसमें आप हमें समझाएंगे कि नौं दरवाजे संसार की तरफ खुलते हैं और दसवां दरवाजा जहाँ परमात्मा बज्र का किवाड़ लगाकर बैठा है वह अंदर की तरफ खुलता है। जब हम साधना करके तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं वहाँ बैठकर बार-बार सिमरन करते हैं यह दरवाजे को खटखटाना है। हम बाहर से दरवाजा खटखटाते हैं तो वह अंदर की तरफ खुलता है। जब साधक पूरी तरह एकाग्र होकर यहाँ बैठ जाता है जिसे हम समाधि की अवस्था भी कहते हैं; उस समय पूरी एकाग्रता की वजह से उसे बाहर की याद बिल्कुल भूल जाती है।

जमींदार बीज डालने से पहले जमीन को साफ-सुथरा करके खेती की तैयारी करते हैं फिर भी उस खेत में से लदीन वगैरहा निकालते रहते हैं। जब हमारा भक्ति करने का मौका आता है उस समय हम अपने हृदय की सफाई की तरफ ध्यान नहीं देते अगर सन्त इसमें 'नाम' का बीज डाल भी देते हैं तब भी हम इसमें पैदा होने वाले विषय-विकारों के लदीन को बाहर नहीं निकालते। साधक को कुछ शर्तें अवश्य पूरी करनी पड़ती हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! शिष्य की भी कुछ ड्यूटियां होती हैं जो उसे अवश्य पूरी करनी पड़ती हैं। गुरु 'नाम' देकर अपनी ड्यूटी से कभी बेफिक्र नहीं होता।'' आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनें:

काम क्रोध परहर पर निंदा।। लब लोभ तज होह् निचिंदा।।

'शब्द-नाम' की कमाई करने के लिए सबसे पहले काम को छोड़ना है। काम और 'नाम' का दिन-रात का फर्क है। जहां काम है वहां 'नाम' प्रकट नहीं हो सकता। काम से हमारी सुरत तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं होती नीचे गिर जाती है। 'नाम' की चढ़ाई ऊपर की तरफ है और काम की गिरावट नीचे की तरफ है।

क्रोध से हमारा ख्याल फैल जाता है। जब क्रोधी आदमी को क्रोध आया हो उस समय आप उसका चेकअप करवाकर देखें! उस समय उसका ब्लड प्रेशर हाई होगा। क्रोध में आकर जो अपने आपको ही भूला हुआ है क्या वह भक्ति में अपना ख्याल इकट्ठा कर सकता है; क्या वह तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाएगा? कबीर साहब कहते हैं, ''कामी और क्रोधी आदमी भक्ति नहीं कर सकते, कोई सूरमा बहादुर ही भक्ति कर सकता है।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार छोड़ दें ये हमारे अंदर रूकावट हैं। क्या हम इन्हें अपने आप छोड़ सकते हैं? अगर भयानक बीमारी लगी है तो हमें डाक्टर का सहारा लेना पड़ता है क्योंकि वह बीमारी का ईलाज करने में माहिर होता है, उसे दवाई के बारे में भी जानकारी होती है। डाक्टर दवाई देकर कुछ परहेज भी बताता है अगर मरीज डाक्टर से दवाई लाकर उसे अलमारी में रख दे परहेज न करे और रोज डाक्टर को गालियां निकाले कि मेरा ईलाज नहीं हुआ तो इसमें डाक्टर का क्या कसूर है? वह जिस प्यार से डाक्टर से दवाई लाया है उसे उसी प्यार से दवाई खानी चाहिए और परहेज भी करने चाहिए।

सन्त-सतगुरु हमें साधना करने के लिए कहते हैं। हमने 'नाम' तो प्राप्त कर लिया लेकिन हम उस नाम की साधना नहीं करते अगर बच्चा स्कूल ही न जाए तो वह कैसे पढ़ेगा? टीचर के आगे विनती करता रहे मुझे अच्छे नम्बरों में पास कर दें तो वह बच्चा कैसे पास हो सकता है? विनती करना बुरा नहीं, बच्चा स्कूल भी जाए और टीचर के कहे मुताबिक पढ़े भी। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

लद् वी दे लद्देन्दा वी दे, लद्दन वाला भी घरो दे।

पहले हम 'नाम' नहीं जपते जब अन्त समय आता है तब हम गुरु की इंतजार करते हैं। गुरु ने किसी से कर्ज तो नहीं लिया होता कि गुरु आए और हम भक्ति न करें। वह फिर भी दयावान होता है अगर बाहर मौज नहीं बरताता तो अंदर अंड में सूक्ष्म में जाकर संभाल करता है।

भ्रम का संगल तोड़ निराला हर अंतर हर रस पाया।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''नौं द्वारों के अंदर भ्रम है। हम विषय-विकार, निन्दा-चुगली के रस को मीठा समझते हैं जो फीका है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे है अगर हम विषय-विकार, निन्दा-चुगली को एक दो महीने छोड़ भी दें तो ये हमारे ऊपर उससे भी ज्यादा जोर डालेंगे। जिस तरह कोई आदमी सुलगते हुए कोयलो के ऊपर राख डाल देता है तो कुछ समय के लिए अग्नि शान्त लगती है लेकिन जब आंधी आती है तो वह अग्नि पहले से भी ज्यादा भड़क उठती है।''

हम कुछ समय मंदिरों-मस्जिदों में जाकर सोचते हैं! हम **निर्मल** हो गए है। हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर काबू पा लिया है। जब फिर दुनिया का सामना करना पड़ता है तो यह आग पहले से ज्यादा भड़कती है, हमारा मन हमें अंगुलियों पर नचाता है। यह भ्रम का संगल तभी टूटता है जब हम ब्रह्म की चोटी से ऊपर चले जाते हैं। त्रिकुटी में इनकी सूक्ष्म जड़ है। हम जब तक पारब्रह्म में नहीं जाते तब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से छुटकारा नहीं पा सकते।

निस दामन ज्यों चमक चंदायण देखै।। अहनिस जोत निरंतर पेखै।।

जो सन्त-महात्मा अंदर जाते हैं वे आपको अंधविश्वास नहीं देते। वे कहते हैं कि आओ और देखो लेकिन हममें से कितने लोग अंदर जाने के लिए तैयार होते हैं? पहले ज्योत नजर आती है उसके बाद चढ़ते सूरज की लाली की तरह सूरज नजर आता है। पारब्रह्म में पहुँचकर पूर्णिमा की रात जैसा चन्द्रमा नजर आता है। जब हम तजुर्बा कर लेते हैं तो हमारे अंदर दिन-रात का फर्क नहीं रहता। चाहे हम रेलगाड़ी में चाहे हवाई जहाज में सफर करते हैं हमारे अंदर दिन चढ़ा ही रहता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा ने हमारे अंदर प्रकाश रखा है। जब कोई व्यक्ति अंधेरे में रास्ता भूल जाता है तो आवाज उसे मंजिल पर पहुँचाती है। वह आवाज से अपनी डारेक्शन कायम कर लेता है कि यहाँ से आवाज आ रही है यहाँ मेरी बस्ती या शहर है। प्रकाश से आसान हो जाता है वह झाड़ियों में नहीं फँसता। इस तरह आपको ज्योत, सूरज, चन्द्रमा के दर्शन होंगे।''

आनंद रूप अनूप सरूपा गुर पूरै देखाया।।

'नामदान' के वक्त पूरा सतगुरु उस खुशी के देश को दिखाता है और इकबाल भी करवाता है कि आपने क्या देखा? उस समय अभ्यासी को कुछ न कुछ अवश्य नजर आता है। चाहे प्रकाश, चाहे तारे या चमकती हुई रोशनी आए जाए। इस तरह का थोड़ा बहुत अनुभव जरूर होता है। सन्त 'नाम' का दीपक जलाकर अंदर रखते हैं तभी अभ्यासी का आगे का रास्ता चलता है। यह पूरे गुरु की निशानी है। महात्मा के माथे पर कोई बोर्ड लगा हुआ नहीं होता जो हम पढ़ लेंगे।

सतगुरु मिलो आपे प्रभ तारे।। ससि घर सूर दीपक गैणारे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आप ऐसे पूरे महात्मा के चरणों में जाएं और समझें कि आप मुक्ति के दरवाजे पर आ गए हैं।''

देख अदिसट रहो लिव लागी सभ त्रिभवण ब्रह्म सबाया।।

जब हम सूरज चन्द्रमा सितारे देख लेते हैं सतगुरु के स्वरूप तक पहुँच जाते हैं तब हम **निर्मल** हो जाते हैं, सतगुरु के पक्के शिष्य बन जाते हैं फिर हमें तीनों भवन-*सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण* त्रिलोकी तक ऐसे नजर आते हैं जैसे हम किताब पढ़ते हैं। जब हम इन्हें अपने अंदर देख लेते हैं हमें पता लगता है कि ब्रह्म सबके अंदर समाया हुआ है।

जब तक हम अपने अंदर तजुर्बा नहीं करते तब तक हम जुबानी ही कहते हैं कि तुझमें भी ब्रह्म है, मुझमें भी ब्रह्म है लेकिन हमने देखा नहीं होता। आप सोचकर देखें! क्या वह ब्रह्म चींटी, भेड़, बकरी, हैवानो में नहीं? क्या फिर हम भेड़ो, बकरियों, गायों का गला काटेगें? सवाल ही पैदा नहीं होता ऐसा करना तो क्या सोच भी नहीं सकते!

अमृत रस पाए तृसना भौ जाए।। अनभौ पद पावै आप गवाए।।

जब हम पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं ब्रह्म को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं वहाँ सतगुरु आत्मा को पीने के लिए अमृत देता है। उस अमृत को पीकर हमारी सारी तृष्णा खत्म हो जाती है, हम **निर्मल** हो जाते हैं। हमारा अनुभव खुल जाता है हमें जातिय तौर पर तजुर्बा हो जाता है। वहाँ पहुँचे हुए को आप सच्चा शिष्य भी कह सकते हैं; पूरा शिष्य वहीं जाकर बनता है।

गुरु गोविंद सिंह जी ने भी कहा था, ''जिसके अंदर ज्योत प्रकट हो जाती है वही सच्चा खालसा है। जिसने ज्योत प्रकट नहीं की वह खालसा नहीं निखालस है।'' गुरु रामदास जी कहते हैं:

अमृत रस सतगुरु चुवाया, दसवें द्वार प्रकट होय आया।

वहाँ अमृत का उल्टा प्याला सीधा हो जाता है। जब हम आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो सतगुरु उस प्याले को भरता है।

ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल शबद कमाया।।

आप प्यार से कहते हैं, ''वह **निर्मल** 'शब्द' सच्चखंड से उठकर दसवें द्वार से होता हुआ हमारी आँखों में धुनकारें दे रहा है। यह शब्द हर किसी के अंदर धुनकारें दे रहा है इसमें औरत, मर्द, अमेरिकन या हिन्दुस्तानी का सवाल नहीं। यह 'शब्द' सच्चखंड से आ रहा है जो खुशकिस्मत सन्तों से रास्ता लेकर अंदर जाकर 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं वे सच्चखंड पहुँच जाते हैं।''

अदृसट अगोचर नाम अपारा।। अति रस मीठा नाम प्यारा।।

इसे परमात्मा की शक्ति कह लें!'नाम' कह लें! यह अदृष्ट है। हम इसे इन आँखों से नहीं देख सकते। यह अगोचर है अगम है हम इसकी अगमता नहीं लख सकते, इसे गुरुमुख ही लख सकते हैं। यह 'नाम' आत्मा को मीठा लगता है। जो खुशकिस्मत नौं द्वारे खाली करके अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतारकर वहाँ पहुँच जाता है अगर उससे यह कहें कि तू सात मुल्कों की बादशाही ले ले इस रस को छोड़ दे, अभ्यास को छोड़ दे या गुरु का पल्ला छोड़ दे तो वह कभी नहीं छोड़ सकता।

आप इतिहास पढ़कर देखें! जब गुरु तेगबहादुर जी को दिल्ली में वक्त की हुकूमत कत्ल करने लगी उस समय भाई मतिदास से यह कहा गया, ''तुम्हारा गुरु पिंजरे में कैद है यह आजाद नहीं हो सकता क्या तुम इसका पल्ला नहीं छोड़ सकते?'' भाई मतिदास ने कहा, ''अगर आप मुझ पर दया करना चाहते हैं तो जब मुझे आरे से चीरेंगे तब मेरा मुँह उस पिंजरे की तरफ कर देना।'' आप सोचकर देखें! इसका नाम सच्ची सिक्खी है। एक तरफ लालच और दूसरी तरफ गुरु है लेकिन जिसे 'नाम' का रस आ गया उसने गुरु को नहीं छोड़ा।

नानक कौ जुग जुग हर जस दीजै हर जपीऐ अंत न पाया।।

गुरु नानकदेव जी महाराज परमात्मा के आगे अरदास करते हैं अगर तू मुझे हर युग में अपना यश करने का मौका देगा तो फिर मैं कौन सा कह दूंगा कि मैंने ज्यादा यश कर लिया है। जिन्हें यश करने

का रस आ गया है वे गुरु को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। वे कहते हैं कि हे परमात्मा! हमारे ऊपर और दया कर ताकि हम अपने गुरु का और यश कर लें। गुरु मिला तो ही हम आत्मा को शान्ति दे सके, इस अमृत को पी सके; **निर्मल** होकर यहाँ पहुँच सके।

अंतर नाम परापत हीरा।। हर जपते मन मन ते धीरा।।

'नाम' अंदर है। हम पढ़-पढ़ाई से 'नाम' को प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु गोविंद सिंह जी ने अपनी बानी में जिक्र किया हैः

वेद कतेब न भेद लिखयो जो गुर गुरु ने मोहे दिखायो।।

मुझे 'नाम' का भेद सतगुरु से मिला। यह वेद-कतेब पढ़ने से नहीं मिलता। वेद-कतेब इज्जत के काबिल हैं ये 'नाम' का जिक्र करते हैं, नाम के फायदे बताते हैं 'नाम' का वर्णन करते हैं। वेद-कतेब पढ़कर हम 'नाम' प्राप्त नहीं कर सकते। वेद-कतेब तो हमें यही कहते हैं कि आप किसी पूर्ण महात्मा के चरणों में जाएं और उससे नाम प्राप्त करें। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

भाई रे गुरु बिन भक्ति न होय, पूछो ब्रह्मो नारदे वेद व्यासे कोय।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो! आप वेद व्यास और नारद की लेखनियां पढ़कर देख लें हम गुरु के बिना भक्ति कर ही नहीं सकते। हमारी मंजिल इस तरफ है लेकिन हम दूसरी तरफ जा रहे हैं तो हम मंजिल पर किस तरह पहुँचेंगें? तारीफ तो गुरु की है। 'नाम' हमारे अंदर है नाम को हीरे की तरह बयान किया गया है। हीरा पत्थर है 'नाम' एक शक्ति है।'' पल्टू साहब कहते हैंः

जे कोई चाहे नाम तो नाम अनाम है।
पढ़न लिखन में नाहें नेह अक्षर काम है।
रूप कहो अनुरूप पवन अनिरेख ते।
हां रे पल्टू गैब दृष्टि ते सन्त नाम वो पेखते।

सन्तों का अनुभव खुल जाता है। वे 'नाम' को बड़े प्यार से देखते हैं। भीखा साहब कहते हैंः

भीखा भूखा को नहीं, सबकी गठड़ी लाल।
गिरह खोल न जाणीं, तांते भये कंगाल।

हम रूहानियत में सचमुच कंगाल हैं क्योंकि जब तक हम पूरे महात्मा के पास जाकर युक्ति लेकर साधना नहीं करते तब तक ब्रह्म में जाकर रूह और मन की गाँठ नहीं खोल सकते। जब हम 'नाम' जपकर अंदर जाते हैं तो मन को धीरज आ जाता है।

दुघट घट भौ भंजन पाईऐ बाहुड़ जनम न जाया।।

वहाँ पहुँचकर हमें दुखों का नाश करने वाला भवभंजन 'नाम' मिल जाता है। हमारी आत्मा 'शब्द' का रस पीकर बलवान बन जाती है। यह गुरु की तारीफ है जिसने दया करके हमें रास्ता दिया साधना करने का मौका दिया।

भगति हेत गुर शबद तरंगा।। हर जस नाम पदारथ मंगा।।
हर भावै गुर मेल मिलाए हर तारे जगत सबाया।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम सारे ही भक्ति का पदार्थ मांगते हैं। हम सब अपने-अपने तरीके से मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों में जाकर प्रार्थनाएं करते हैं अगर परमात्मा को मंजूर हो कि मैंने इस आत्मा को बार-बार संसार में चक्कर नहीं लगवाना इसे सुख और दुख की नगरी में नहीं भेजना उसे ही गुरु के बारे में जानकारी देता है। उसी आत्मा के अंदर 'नाम' लेने की इच्छा पैदा होती है।''

अगर परमात्मा को मंजूर न हो तो चाहे महात्मा हमारे पड़ोस में रहने लग जाए, चाहे हमारे घर में ही क्यों न पैदा हो जाए तो भी हमारे अंदर 'नाम' प्राप्त करने की या गुरु के साथ मिलाप करने की इच्छा पैदा नहीं होती। आप कहते हैंः

भागहीन गुरु न मिले निकट बैठयां नित पास।

अगर हमारे भाग्य में गुरु नहीं है तो चाहे गुरु कितना भी नजदीक क्यों न हो हमें नहीं मिलता; यकीन ही नहीं आता।

धुर भाग वड्डे हर पाया नानक रस गुल्ला।

बड़े भाग्य से ही हम परमात्मा रूप महात्मा के चरणों में जाकर दो चार मिनट अपने मन को टिकाते हैं। परमात्मा को अच्छा लगे तभी वह हमारा मिलाप गुरु के साथ करवाता है।

जिन जप जपयो सतगुर मत वाके।। जम कंकर काल सेवक पग ताके।

जो सतगुरु की भक्ति करता है गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेता है वह पारब्रह्म में पहुँच जाता है यम उसके साथ दोस्ती कर लेते हैं फिर उसकी तरफ आँख भरकर भी नहीं देखते।

ऊतम संगत गत मित ऊतम जग भौजल पमनमनार तराया।।

दुनिया में महात्मा की संगत ही उत्तम संगत है। संसार समुद्र से छूटने के लिए ऋषियों-मुनियों ने बड़े-बड़े तप किए आखिर वे हड्डियों का ढ़ेर हो गए। उनमें सिर्फ यही कमी थी कि उन्हें कोई पूरा गुरु नहीं मिला; परमात्मा के घर जाने का रास्ता नहीं मिला। हम सतगुरु का नाम जपकर ही भवजल से पार हो सकते हैं।

गुरुमुख कोट उद्धार दा, दे नामें एक कणी।

गुरु अपने कमाए हुए 'नाम' में से करोड़ो जीवों को एक कणी बख्शकर ले जा सकता है। सिर्फ उन्हीं का उद्धार होता है जिनके उत्तम भाग्य होते हैं वही पूर्ण महात्मा के चरणों में जाकर बैठते हैं। महात्मा जो कुछ कहते हैं उसे वे अपने गले से नीचे उतार लेते हैं बाकी लोग एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं।

एह भवजल जगत शबद गुर तरीऐ।। अंतर की दुबिधा अंतर जरीऐ।।
पंच बाण ले जम कौ मारै गगनंतर धणख चढ़ाया।।

गुरु नानकदेव जी प्यार से समझाते हैं, ''**शब्द का बेड़ा परमात्मा ने बनाया है और इस बेड़े को सन्तों के हवाले किया हुआ है। इस बेड़े के मल्लाह भी सन्त ही हैं। जो लोग पक्के इरादे से इस बेड़े में चढ़ जाते हैं वे भवजल से पार हो जाते हैं जो डाँवाडोल मन से इस बेड़े में बैठते है वे भमक्कड़ों की तरह इस संसार में चक्कर खाते फिरते हैं। हम 'शब्द' के बेड़े में सवार होकर ही भवजल से पार हो सकते हैं।**''

मैं सन् 1944 के बारे में जिक्र किया करता हूँ कि जब मैं वापिस नशहरा सीमाप्रान्त की छावनी में आया तो मुझे लाहौर में शाहीकला देखने का ख्याल आया। मैंने उस किले में एक केलेंडर देखा जिसमें एक बेड़ा बना हुआ था। उस बेड़े में चारों वर्णों के लोग जटाधारी साधु, तिलक लगाए हुए पंडित, माला फेरने वाले उदासी साधु, सिक्ख और टोपी पहने हुए मुसलमान भी बैठे थे। गुरु गोविंद सिंह जी के हाथ में चप्पू था वह अकेले ही उस बेड़े को चला रहे थे। जिससे यह शिक्षा मिलती है कि सन्त 'नाम' का बेड़ा लेकर आते हैं। गुरु ही बेड़े को चलाने वाला मल्लाह है। जो लोग पक्के मन से उस बेड़े में बैठ जाते हैं वे भवजल से पार हो जाते हैं।

अब आप प्यार से कहते हैं कि गगन दूसरी मंजिल में एक ठिकाना है जहाँ जाकर शब्द अभ्यासी बाण चलाता है। आपको जो 'पाँच शब्द' - पांच बाण दिए जाते हैं यहाँ उन्हीं का जिक्र है जिनसे काल के सारे पतंगे- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार समाप्त हो जाते हैं; वहाँ पहुँचकर ही हम इनसे छुटकारा पा सकते हैं।

साकत नर शबद सुनत क्यों पाईऐ। शबद सुनत बिन आईऐ जाईऐ।।

मुसलमानों की पवित्र किताब में भी जिक्र आता है कि एक मोमिन है दूसरा काफिर है। मोमिन परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा का रूप हो जाते हैं काफिर परमात्मा को नहीं मानते। इसी तरह हमारे हिन्दु शास्त्रों में एक *गुरमुख* और दूसरा *मनमुख* है। *मनमुख* वही

करता है जो उसके मन में आता है *गुरुमुख* गुरु का मुख बन जाता है। गुरु जो बोलता है वही शिष्य बोलता है वह उसे अपना लेता है।

'सुरत-शब्द' के अभ्यास में हमने न बाल-बच्चे छोड़ने है न समाज और बोली ही बदलनी है। हमें कर्मों के मुताबिक जो मिला है उनके साथ लेनदेन पूरा करना है। सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप अपने-अपने समाज में रहें आपको जो ड्यूटी मिली है उसे पूरा करें। आप अपने घर-समाज में रहते हुए 'सुरत-शब्द' का अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सतगुरु पूरा भेटिए पूरी होय जुगत।
हसेन्दयां खेलेन्दयां पहनेन्दयां विचे होवे मुक्त।

अगर आपको कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए तो वह आपको 'सुरत-शब्द' का अभ्यास बताएगा। आप गृहस्थ में रहते हुए परमात्मा की भक्ति कर सकते हैं परमात्मा को पा सकते हैं। सच तो यह है कि गृहस्थी त्यागियों से जल्दी परमात्मा को पा सकते हैं क्योंकि त्यागी बनकर हम घर-बार छोड़ देते हैं बाहर जाकर डेरों की निगरानी करते हैं; वहाँ जो जगह बनी होती है उसके लिए अदालतों में जाते हैं, झगड़े करते हैं। वहाँ जो गद्दी के आस-पास बैठे होते हैं वे भी आपस में झगड़ते हैं कि मैंने गद्दी प्राप्त करनी है।

आप प्यार से कहते हैं कि हमने घर छोड़ दिया। एक बीबी के हाथ का खाना छोड़कर अनेकों के आगे हाथ करना पड़ता है, तन ने कपड़ा मांगा अपना कमाया नहीं तो कपड़ों के लिए किसी के आगे हाथ फैलाना पड़ता है। तन ढ़कने के लिए झोपड़ी की जरूरत पड़ेगी फिर किसी से कहेंगे कि मकान बनवाओ हमें गर्मी-सर्दी लगती है बारिश से बचना है। सोचकर देखें! हमने किस चीज का त्याग किया? फिर भी गृहस्थियों की तरफ ही आना पड़ता है। दूसरी तरफ गृहस्थी साधु है जो अपने दस नाखूनों की मेहनत करता है। वह जैसा चाहे मीठा, खट्टा खाना खा सकता है, अपने पैसों से कपड़े बनवाकर पहन सकता है; अपनी मेहनत के पैसों से मकान बनवाकर रह सकता है। वह गृहस्थ में रहता हुआ अपनी कमाई से सारी जरूरतें पूरी कर लेता है। महात्मा कहते हैं:

त्यागना त्यागना त्यागना काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार त्यागना।
माँगना माँगना माँगना हरि रस गुरु से माँगना।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं अगर आपने त्यागी बनना है तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को त्याग दें अगर आपने गुरु से माँगना है तो हरि-रस माँगें। 'नाम' माँगें अंदर चढ़ाई करने के लिए विनती करें लेकिन हम क्या करते हैं?

देश छोड़ परदेसी धाया, पंच चंडाल नाले ले आया।

अपना घर छोड़कर परदेस या जंगलों में चले जाते हैं। गुरुद्वारों में डेरे लगा लेते हैं लेकिन वे पांचों चंडाल तो साथ ही होते हैं फिर झगड़े करते हैं उनकी यही हरकते हैं।

नानक गुरमुख मुकत परायण हर पूरै भाग मिलाया।।

मुक्ति गुरुमुखों के हाथ में है। जब तक परमात्मा हमारे भाग्य में नहीं लिखता तब तक हम गुरुमुखों के दर्शन नहीं कर सकते 'नाम' तो लेना ही क्या?

निरभौ सतगुरु है रखवाला।। भगति परापत गुर गोपाला।।
धुन अनंद अनाहद वाजै गुरशबद निरंजन पाया।।

आप प्यार से कहते हैं, ''सतगुरु का 'नाम' जपकर अपने गुरु की दया से गुरु को अंदर प्रकट करके निर्भय हो जाते हैं फिर न काल का डर है न काम, क्रोध का डर है कि पता नहीं ये कब गिरेबान पकड़ लेंगे! अंदर शब्द की धुन प्रकट हो जाती है हमें दिन-रात शब्द की धुनकारें सुनाई देती हैं। ये धुनकारें मीठी और सुरीली हैं मन को खींच लेती हैं। आत्मा शब्द पर सवार होकर अपने देश पहुँच जाती है।''

परमात्मा समुद्र है सतगुरु लहर है और आत्मा बूंद है। समुद्र भी पानी है लहर भी पानी है बूंद भी पानी है फर्क सिर्फ बिछोड़े का है अगर बूंद लहर के सुपुर्द हो जाती है तो लहर समुद्र में से उठकर समुद्र में ही बैठ जाती है। सतगुरु परमात्मा में से आया है जो आत्माएं सतगुरु के हवाले हो जाती हैं वे परमात्मा में जाकर समा जाती हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! अगर आप 'नाम' नहीं जप सकते तो कम से कम सन्त-सतगुरु से प्यार ही कर लें क्योंकि जहाँ हमारा प्यार होगा आखिरी समय हमें वही ख्याल आएगा।'' आप नए भजनों में पढ़ते हैंः

नाम जपना कल विच औखा है शरणी पे जाना सोखा है।

उस धुन में आनंद है शान्ति है। वह धुन न दिन में बंद होती है न रात को बंद होती है; मरने तक वह धुन बंद नहीं होती।

निरभौ सो सिर नाहीं लेखा।। आप अलेख कुदरत है देखा।।
आप अतीत अजोनी संभौ नानक गुरमत सो पाया।।

वह महात्मा निर्भय है माया की मैल से ऊपर है, न्यारा है। सतगुरु की दया से हमने उस निर्भय परमात्मा को पा लिया है। परमात्मा अजोनी है अकाल है काल की हद से परे है। जिस परमात्मा में ये गुण हैं वह किसी से नहीं डरता और न ही योनियों में फिरता है क्योंकि ये सब योनियां उसने पैदा की हैं। सतगुरु की शरण में जाकर हमने उस परमात्मा को पा लिया है जिसमें ये सब गुण हैं।

अंतर की गत सतगुर जाणै।। सो निरभौ गुर शबद पछाणै।।
अंतर देख निरंतर बूझै अनन्त न मन डोलाया।।

परमात्मा अंदर है जो उस परमात्मा को अपने अंदर देखते हैं उन्हें बाहर हर किसी में परमात्मा नजर आता है। पहले हमें उसका तजुर्बा अपने अंदर करना पड़ता है। गुरु साहब कहते हैंः

दूजा होय सो अवरो कहिए।

निरभै सो अभ अंतर वसया।। अहनिस नाम निरंजन रसया।।
नानक हर जस संगत पाईऐ हर सहजे सहज मिलाया।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि दुनिया में उसका जीवन इस तरह का हो जाता है जैसे मक्खी शहद भी खा लेती है और उड़ भी जाती है। जो मक्खी शहद के बीच में जाकर बैठ जाती है वह न शहद खा सकती है और न उड़ ही सकती है। जो महात्मा अपने अंदर परमात्मा को देखता है उसका जीवन उस मक्खी की तरह होता है। वह दुनिया में रहता हुआ दुनिया की मैलों में नहीं लिपटता।

अंतर बाहर सो प्रभ जाणैं।। रहै अलिपत चलते घर आणै।।
ऊपर आद सरब तिह लोई सच नानक अमृत रस पाया।।

परमात्मा सबसे ऊपर है, त्रिलोकी उसने पैदा की है। जब हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से छुटकारा पा लेते हैं अंदर जाकर शब्द से जुड़ जाते हैं तो हमें सच्ची शान्ति मिल जाती है। गुरु की शरण में जाना पूरे भाग्य से होता है।

मैं कई बार यह कहानी सुनाया करता हूँ किसी आदमी की पत्नी और एक बेटा था, उन्होंने शिव की भक्ति की। शिव प्रकट हुए उन्होंने औरत से पूछा, ''क्या माँगती है?'' औरतों को गहने और रूप प्यारा होता है। उस औरत ने कहा, ''देवता जी मुझे अच्छा रूप और गहने दें।'' शिव ने उसे वर दे दिया। वह सुंदर हो गई, उसने अच्छे गहने पहने। वहाँ से एक राजा शिकार खेलने के लिए जा रहा था उसने देखा कि गरीब लोगों के पास इतनी सुंदर औरत बैठी है। राजा ने जबरदस्ती उस औरत को अपने घोड़े पर बिठा लिया कि तुझे महलों में ले चलते हैं वहाँ तेरी शोभा होगी।

उस आदमी ने सोचा मुझ गरीब के पास एक ही औरत थी। उसने शिव की आराधना की। शिव प्रकट हुए उन्होंने उस आदमी से पूछा तुझे क्या चाहिए? उस आदमी ने कहा, ''मेरी औरत का मुँह सूरनी जैसा हो जाए।'' शिव जी ने उसे वर दे दिया। वह औरत राजा के पीछे बैठकर सूरनी की तरह घुर-घुर करने लगी तो राजा ने पीछे देखा कि मेरे पीछे

क्या हो रहा है शायद यह कोई बला है। राजा ने उसे घोड़े से नीचे फैंक दिया। वह वापिस अपने पति और बेटे के पास आ गई।

अब उस बेटे ने शिव की आराधना की। शिव ने प्रकट होकर लड़के से पूछा तू क्या माँगता है? लड़के ने शिव से कहा कि मेरी माँ पहले की तरह हो जाए। अब आप देखें! उन्होंने भक्ति की और माँगा भी तो क्या? जब भाग्य में न हो तो वे वैसे ही रह गए।

प्यारेयो! अगर भाग्य में न हो तो हम 'नाम' प्राप्त नहीं कर सकते और न ही साध-संगत में जा सकते हैं। गुरु ग्रन्थ साहब में सतसंग, सतगुरु, नाम और वातावरण इन चार चीजों की महिमा है। सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

बिसर गई सब तात पराई जब ते साध संगत मोहे पाई।
न कोई वैरी न ही बेगाना सगल संग हमको बन आई।
जो प्रभ कीन्हा सो भल मान्यों ऐह सू मत साधु ते पाई।
सबमें रव रहेया प्रभ ऐको पेख पेख नानक बिगसाई।

साधु की संगत में आकर मेरे अंदर की ईर्ष्या खत्म हो गई। साधु की संगत में आकर पता चला कि परमात्मा सबके अंदर है अगर हम किसी के साथ वैर करते हैं तो परमात्मा के साथ वैर करते हैं। बीमारी आई तो परमात्मा का भाणां माने कि यह मेरे ही कर्मों का दंड है। ऐसा नहीं कि बीमारी आने पर हम परमात्मा में नुख्स निकालने लग जाएं, यह सब तो होछापन होता है।

बिन किया लागे नाहीं किया न बिरथा जाए।

सन्तों की संगत में जाकर पता लगता है कि किसी को किसी का कर्म नहीं लगता अगर हम परमात्मा की भक्ति करेंगे तो परमात्मा हम पर जरूर मेहर करेगा। जब इंसान इंसान की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान ही बेइंसाफ है? वह जरूर देता है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि सन्तों की संगत में जाकर पता लगा कि परमात्मा किस युक्ति से सबके अंदर बैठा है। हम भूले हुए हैं जो एक-दूसरे को बुरा समझते हैं। सतगुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता नाम के बिना मुक्ति नहीं। सामाजिक लोग यह तो मानते हैं कि नाम के बिना मुक्ति नहीं लेकिन यह नहीं सोचते कि 'नाम' क्या चीज है?

आप कहते हैं कि 'नाम' की गुप्त डोरी हर एक के घट के अंदर है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

जिस वक्खर को लैण तू आया राम नाम सन्तन घर पाया।
तज अभिमान रहयो मन मोल राम नाम हृदय में तोल।

आप कहते हैं कि परमात्मा ने जिस मकसद के लिए तुझे जन्म दिया है तू उस 'नाम' को प्राप्त कर तभी तेरा जन्म-मरण कटेगा; तू **निर्मल** होगा। वह नाम सन्तों से मिलेगा सन्त ही उस रमत राम के साथ जोड़ते हैं। सन्तों के चरणों में जाने से पहले आप यह न सोचें कि हम साहूकार हैं यह सन्त गरीब है। यह हल चलाता है, जूतियां बनाता है अगर सन्त किसी से लेकर गुजारा करते है तो इससे उनकी गुरुमुखता में फर्क पड़ता है। सन्तों के चरणों में जाने से पहले आप अपना अभिमान छोड़ दें। वे आपको नाम के साथ जोड़ देते हैं आप कमाई करके साधना करके देखें कि उसमें कितनी शान्ति है, सुख है तृप्ति है।

'नाम' का अभ्यास करने के लिए वातावरण की जरूरत है। गुरु नानकदेव जी ने इस शब्द के शुरू में ही यह कहा है कि आपको काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार छोड़ देना चाहिए अगर हम किसी की निन्दा करना, क्रोध करना छोड़ देंगे तो हम खुद शान्ति से रहेंगे और परिवार के सदस्य भी शान्ति से रहेंगे, ऐसा घर स्वर्ग बन जाता है।

हमें चाहिए कि गुरु नानकदेव जी ने जो कुछ समझाया है उसे अपनी जिंदगी में ढ़ालें, अपने जीवन को पवित्र बनाएं। हमें जो मौका परमात्मा ने दिया है उसका पूरा-पूरा फायदा उठाएं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन पर बिठाने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

अमृत वेला

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया। सभी परम सन्तों का सदा से यही होका रहा है कि भक्ति अमोलक धन है, उत्तम पदार्थ है; सच्चे सुख और सच्ची इज्जत की दाता है। परमात्मा की भक्ति मन को शान्ति देती है। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है।

जब तक हम किसी पूर्ण महात्मा के चरणों में जाकर अपना सिर नहीं झुकाते तब तक हम इस भक्ति रूपी धन को प्राप्त नहीं कर सकते। सन्त-महात्मा इस संसार में परमात्मा के बेटे बनकर आते हैं सन्त-महात्माओं ने भक्ति करके परमात्मा को अपने ऊपर खुश किया होता है। वे परमात्मा के विश्वास पात्र होते हैं। सन्त-महात्मा परमात्मा से बड़े नहीं होते लेकिन प्यारा बेटा अपने पिता से जो चाहे करवा सकता है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

ओह दर फेर न कोई पाऐन्दा।

वह जिसे भक्ति का धन दे देते हैं उसका दुनिया में आना-जाना समाप्त हो जाता है और मनुष्य जामें में आने का मकसद पूरा हो जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमें साकत पुरुषों की सोहबत-संगत छोड़कर सदा मालिक के प्यारों की संगत में रहना चाहिए। मालिक के प्यारों की सोहबत-संगत लेखे में है।''

सच्ची बैठक तिना संग जिन संग जपिए नाओ।
तिस संगत न कीजे नानक जिन्हां अपना सुआओ।

मैं हमेशा सतसंगियों को अभ्यास में बैठने से पहले दो-तीन बातें याद रखने के लिए कहा करता हूँ। चाहे आप अभ्यास में यहाँ बैठते हैं चाहे अपने घर में बैठते हैं सबसे पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद करें। मन के अंदर उठ रहे दुनिया के संकल्पो-विकल्पो को शान्त करें। अभ्यास को कभी बोझ न समझें, हमेशा प्रेम-प्यार से करें।

हम जानते हैं कि हर आदमी अपने-अपने काम के लिए भाग रहा है। हर किसी की निगाह आगे की तरफ होती है। कोई कार चला रहा है कोई ट्रक चला रहा है उसका ध्यान अपनी मंजिल की तरफ होता है। इसी तरह हमें भी सतगुरुओं ने सच्चखंड की मंजिल बताई है हमने अपना ध्यान उस तरफ रखना है इधर-उधर की आवाज की तरफ ध्यान नहीं देना। आँखें बन्द करके अपना सिमरन करें।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

निन्दा

77 आर.बी. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी *: क्या आप हमें वह तरीका बता सकते हैं जो आप भजन के समय मन को शान्त रखने के लिए इस्तेमाल किया करते थे?*

बाबा जी : इस बारे में मैंने बहुत कुछ बताया है और बहुत कुछ मासिक पत्रिका में छपने वाला भी है। मैगजीन आने पर आप उसे पढ़ लें। इस बारे में मैंने इस ग्रुप में भी बहुत कुछ कहा है।

एक प्रेमी *: मैं आपसे माया की दुनिया के बारे में पूछना चाहता हूँ कि जब हम वापिस युनाइटेड स्टेटस चले जाएंगे तो वहाँ बहुत सी परेशानियां होंगी जैसे कि हमारी नौकरी इत्यादि। मैं जब गाड़ी चलाता हूँ और दूसरे लोग मुझे ओवरटेक करके आगे निकल जाते हैं तो मुझे बहुत गुस्सा आता है; इस परेशानी को दूर करने के लिए मैं आपकी राय जानना चाहता हूँ। मैं सिमरन करने की कोशिश करता हूँ शायद मेरा सिमरन अच्छा नहीं इसलिए मैं गुस्से से पागल हो जाता हूँ?*

बाबा जी : आपको अपने अंदर सबके लिए प्यार पैदा करना चाहिए अगर कोई आपको ओवरटेक करके आगे निकल जाता है तो आपको उसका पीछा नहीं करना चाहिए। आपको गाड़ी हमेशा सरकार द्वारा तय गतिसीमा के अनुसार सावधानी से चलानी चाहिए और यह बहुत जरूरी है कि गाड़ी चलाते हुए कभी गुस्सा नहीं करना चाहिए।

ज्यादातर एक्सीडेंट इसलिए होते हैं कि हम गाड़ी सावधानी से नहीं चलाते। जब हम तेज गति या लापरवाही से गाड़ी चलाते हैं या दूसरी गाड़ी को ओवरटेक करने की कोशिश करते हैं तभी ऐसी दुर्घटनाएं होती हैं। ऐसा करके हम न सिर्फ अपनी जिंदगी से हाथ धोते हैं बल्कि दूसरों की जान के लिए भी खतरा पैदा करते हैं।

मुझे आशा है कि आप समझ गए होंगे। अब आप सिमरन करते हुए गाड़ी चलाएंगे और गुस्सा नहीं करेंगे।

एक प्रेमी *: अगर पति-पत्नी टाईम टेबल बनाते हैं और उसके अनुसार चलना चाहते हैं लेकिन कई बार ऐसा नहीं कर पाते जैसे पत्नी कोई सामाजिक कार्य करना चाहती है या पति टेलिविजन देखना चाहता है तो उस समय हमारे प्यार और टाईम टेबल पर चलने का प्रश्न आता है तो हमें क्या करना चाहिए?*

बाबा जी *:* अगर पति और पत्नी दोनों में प्यार है तो उन्हें कभी ऐसी दिक्कत नहीं आएगी। दोनों में से अगर एक सतसंगी नहीं भी है तो भी यह दिक्कत नहीं आएगी। दोनों में सच्चा प्यार है तो वे एक-दूसरे को समझेंगे, एक-दूसरे की भावना की कद्र करेंगे और एक-दूसरे का साथ देंगे। आप जानते हैं अगर पति-पत्नी दोनों के बीच प्यार नहीं है चाहे वे दोनों सतसंगी हैं तो भी वे अपनी शादी नहीं बचा पाएंगे। आपने ऐसी बहुत सी शादियाँ टूटते हुए देखी होंगी।

बेसतसंगी जिन्हें भजन-सिमरन के लिए कोई टाईम-टेबल नहीं बनाना होता अगर उनमें प्यार नहीं है तो वे भी अपनी शादी नहीं बचा पाते ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनका मन उन्हें एक-दूसरे से दूर कर देता है और वे अपने रिश्ते में अशान्ति पैदा कर लेते हैं।

हमें चाहिए कि अपने परिवार में प्यार पैदा करें। हमें अपने घर में प्यार भरा वातावरण पैदा करना चाहिए अगर पति-पत्नी में प्यार है तो वे दूसरे को दुख नहीं देगें क्योंकि प्यार तो सुख देना जानता है अगर दोनों में प्यार है तो उन्हें कभी कोई दिक्कत नहीं आएगी। आप एक-दूसरे को समझेंगे और दूसरे के टाईम-टेबल की इज्जत करेंगे अगर टाईम-टेबल अलग-अलग भी है और प्यार है तो भी दिक्कत नहीं आएगी।

एक प्रेमी *: मैं आपसे* ***निन्दा*** *के बारे में एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ आपने हमें पिछले दो सतसंगों में निन्दा के बारे में जानकारी दी है। मैं अच्छा बनाने वाली* ***निन्दा*** *के बारे में पूछना चाहता हूँ। जब हमें यह पता*

लगे कि किसी आदमी को कोई बुरी आदत है अगर हम उसे प्यार से अच्छी सलाह दे तो क्या हम उसके बुरे कर्म ले लेते हैं और अपने अच्छे कर्म दे देते हैं?

बाबा जी : महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा चाहे अच्छे के लिए हो या बुरे के लिए **निन्दा** ही होती है। हमें उन लोगों के कर्मों का बोझ उठाना पड़ता है जिनकी हम निन्दा कर रहे होते हैं। हमें अपनी जिम्मेवारी समझनी चाहिए दूसरों की चिंता नहीं करनी चाहिए। जिस तरह परमात्मा हमारे अंदर है, परमात्मा सबमें है और हम सबकी रक्षा कर रहा है वह हम सबका जिम्मेवार है।''

अगर कोई आपसे अपनी बुराईयों के बारे में पूछे आप तभी उसे उसकी बुरी आदतों के बारे में उसके मुँह पर बता सकते हैं नहीं तो आपको किसी के पास जाकर उसकी बुरी आदतों के बारे में नहीं बताना चाहिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन ग्राहक गुण बेचिए तो गुण सहजो जाए।
गुण का ग्राहक जे मिले ते हाटो हाट बिकाए।

आप किसी खरीददार के बिना अपना कोई सामान बेचना चाहते हैं तो आपको उस सामान की कीमत नहीं मिलेगी अगर आपके पास ऐसा खरीददार आए जो आपके सामान की कीमत जानता है तो आपको उस सामान की अच्छी कीमत मिल जाएगी।

मेरा जातिय तजुर्बा है कि जो लोग दूसरों के पास जाकर उन्हें उनकी गल्तियों के बारे में बताते हैं वे असलियत में खुद ही बुराईयों से भरे होते हैं इसलिए उन्हें दूसरों के अंदर भी वही बुराईयां नजर आती हैं। ऐसे लोग कभी अपनी बुराईयों की तरफ नहीं देखते बल्कि हमेशा दूसरों में बुराईयाँ ढूंढते हैं।

इस दुनिया में नम्रता सिर्फ परम सन्तों के पास है वे ही नम्र हैं। आप जानते ही हैं कि इस दुनिया में लोग अहंकार से भरे हुए हैं उनमे

नम्रता नहीं है। सन्त कभी अपने आपको सच्चा साबित करने की कोशिश नहीं करते जबकि वे सच्चे होते हैं।

आप देखते हैं कि लोग अहंकार से भरे हुए हैं। वे अक्सर ऐसा कहते हैं, ''मैं जो कह रहा हूँ वह सच है।'' वे यह नहीं जानते कि परमात्मा सच है अगर हम अंदर जाएं तो परमात्मा को देख सकते हैं।

सिर्फ सन्त ही परमात्मा के बारे में बात कर सकते हैं, वे कभी किसी की **निन्दा** नहीं करते। इस बारे में परम सन्तों ने बहुत कुछ लिखा है उसमें आपको कहीं भी निन्दा या आलोचना का एक शब्द भी नहीं मिलेगा अगर कोई और व्यक्ति सन्तमत के बारे में भी कुछ लिखता है तो उसमें निन्दा भरी होती है।

सन्तबानी मैगजीन छापने से पहले रसल प्रकिन्स ने मुझसे इजाजत ली तो मैंने उसे प्यार से कहा, ''तुम इस मैगजीन में किसी की आलोचना या निन्दा का एक शब्द भी नहीं लिखोगे। हम यहाँ परमात्मा का संदेश देने के लिए आए है। हम बिना झूठ बोले बिना किसी की **निन्दा** किए सच कह सकते हैं।'' आपने सन्तबानी मैगजीन पढ़कर देखी होगी उसमें आपको निन्दा का एक शब्द भी नहीं मिलेगा। सच्चा महात्मा कभी किसी की बुराई नहीं करेगा और न ही अपने शिष्यों को निन्दा करने या सुनने की इजाजत देगा।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''दूसरों की बुराईयों को देखकर इंसान हँसता और खुश होता है लेकिन वह कभी अपनी बुराईयों की तरफ नहीं देखता जिनका कोई अन्त नहीं है।'' इसलिए हमें अपनी चिंता करनी चाहिए दूसरों की नहीं। जब हम खुद ही अपने मन और इन्द्रियों के नौकर बने हुए हैं तो हम दूसरों की चिन्ता क्यों करते हैं?

परमात्मा हमारा जन्मदाता है। हमारे हर पल का लेखा-जोखा रखा जाता है अगर कोई गलती करता है तो परमात्मा उसे सजा देता है, हम जो अच्छा करते है हमें उसका अच्छा फल मिलता है और बुरे कर्म के लिए सजा मिलती है।

कबीर साहब कहते हैं, ''जो लोग अपने आपको नहीं सुधारते उनकी हालत उस जमींदार की तरह है जो दूसरे के खेत की देखभाल करता है लेकिन उसका अपना खेत खराब हो रहा होता है।'' आप यह भी कहते हैं, ''हे कबीर! तेरा घर कातिलों के घर के पास है लेकिन तू उनकी फिक्र क्यों करता है? जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।''

एक प्रेमी *: अगर कोई भजन-सिमरन के समय आवाज करता है या हिलता-डुलता है और हम उसे एक कोने में ले जाकर उसकी गलती बताएं तो क्या यह भी* ***निन्दा*** *कहलाएगी?*

बाबा जी : यह **निन्दा** नहीं है। आप उसे प्यार से समझाए अगर वह समझदार है तो समझ जाएगा। एक प्रेमी सतसंग में माईक और स्पीकर लगाने की सेवा किया करता था। एक बार वह यह काम कर रहा था तो किसी आदमी ने एक स्पीकर उठाकर दूसरी जगह रख दिया तब उस प्रेमी को इतना गुस्सा आया कि वह एक शब्द भी नहीं बोल सका उसका चेहरा लाल और गर्म हो गया जो देखने लायक था। हमारे अंदर सब्र नहीं है। जब कोई गलती करता है तो हम उसे प्यार से नहीं समझा पाते अगर हम उसे प्यार से समझाएं तो वह समझ जाएगा और शायद माफी भी माँगे।

मैंने अभी आपको जो बातें बताई हैं यह गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की 'सुखमनी' में से ली गई हैं जिसका मतलब *खुशियों का खजाना* है। यह बानी मन को खुशी और शान्ति देती है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''आपको **निन्दा** करके अपना परमार्थ खराब नहीं करना चाहिए। परमार्थ के रास्ते पर चलते हुए निन्दा सबसे बुरी चीज है।''

गुरु अर्जुनदेव जी के अलावा कबीर साहब, पल्टू साहब, रविदास जी की लेखनियों से पता चलता है कि सभी सन्तों के एक जैसे ही विचार थे। सभी सन्तों ने कहा है कि **निन्दा** परमार्थ की जड़ को काट देती है।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

प्रेम के फल

प्रेम की ज्वाला किसी विरले के हिस्से आती है। प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित होने से सब मैलें खत्म हो जाती हैं, अंदर बिल्कुल साफ हो जाता है जिससे रूहानी नजारे खुलने लग जाते हैं; मालिक की ज्योत और धुन प्रकट हो जाती है। जो मालिक के पवित्र दर्शन करना चाहता है वह पहले मन की मैल को धोकर साफ हो जाए। हमारी आँखों से हौमें की पट्टी खुले तभी हम मालिक के जज्बे को देख सकते हैं। यह तभी हो सकता है जब हमारे अंदर प्रीतम को छोड़कर और कुछ न रहे। भक्त और भगवान के बीच किसी और का ख्याल न रहे। **प्रेम** एक ऐसा सरूर है जो हमें पाप-पुण्य से ऊपर करके प्रीतम से अभेद कर देता है।

मौयुनदीन चिश्ती साहब फरमाते हैं, ''न पाप रहा न पुण्य। मैं उस प्रीतम के अंदर इतना लीन हो गया कि वह मेरा रूप बन गया और मैं उसका रूप हो गया। वह इंसान कितना खुशकिस्मत है जो अपने आपको प्रेम की ज्वाला में कुर्बान कर देता है; अपनी हौमें को गँवाकर परमात्मा के साथ जुड़ जाता है। जब तक कोई अपने आपको फनाह नहीं कर लेता उसे मालिक का दीदार नहीं होता; जो उसे खरीदना चाहता है उसे पहले उसी के हाथ बिकना पड़ता है।''

प्रेम से खाली इंसान हों-हों में रहता है उसका जीवन पशुओं से भी गया गुजरा होता है। वह अपनी खुदी में जकड़ा होता है, अंधा होकर अपने आपको अहंकार की मस्ती में सबसे अलग कर लेता है; अपनी बुद्धि के तंग दायरे में कैद रहता है और उसे कुछ नहीं सूझता। **प्रेम** मालिक की प्राप्ति के लिए एक जरूरी साधन है। साधक जन मालिक से सदा उसके प्रेम की लग्न माँगते रहते हैं।

मौलाना रूम साहब फरमाते हैं, ''रब के आशिक की कशिश सब कशिशों से अनोखी किस्म की होती है। यह प्रीतम की लग्न है जो रब का भेद जानने की कुंजी है। प्रेम के बिना फैली हुई वृति एकाग्र नहीं हो सकती और न ही रूह सिमट सकती है इसलिए सूक्ष्म मंडलों में प्रवेश करना मुश्किल है। रूह जब तक उन मंडलों का सफर न करे इंसान उन देशों के इल्म से नावाकिफ रहता है इसलिए सच्चे ज्ञान को पाने के लिए सच्चे महात्मा से प्यार का होना जरूरी है।''

सच्चे गुरु की भक्ति के बिना हम मालिक की जाति के अनुभव से खाली रह जाते हैं। सच्चा ज्ञान बुद्धि का विचार नहीं यह रूह का अनुभव है जिसका खमीर हासिल करने के लिए किसी अनुभवी पुरुष की भक्ति की जरूरत पड़ती है। प्रेम में जाति-पाति का सवाल उड़ जाता है। प्रेमी के अंदर किसी के लिए घृणा नहीं रहती, जिसका ताल्लुक मालिक के साथ है उसे वह प्यारा लगता है। भगवान राम ने एक भीलनी के बेर खाए थे। जब तक जाति-पाति के नाते रहेंगे तब तक भक्ति कहाँ? कबीर साहब कहते हैं:

जब लग नाता जाति का तब लग भक्ति न होय।

जहाँ प्रेम है वहाँ कोई नियम नहीं रहता, न ही व्यवहार की कोई सुध रहती है। मन **प्रेम** में मग्न हो जाता है यहाँ तक की तिथि और वार भी याद नहीं रहते।

यहाँ प्रेम तहाँ नेम न तहाँ न बुद्धि व्यवहार।
बुद्धि मग्न जब मन भया कौन गिने तिथि वार।

प्रेम में जादू है इसकी हस्ती में दुख-सुख, गर्मी-सर्दी, खुशी-गमी और अविद्या का अंधेर मिट जाता है। प्रेम में नफा और नुकसान बराबर हो जाते हैं। दिमाग का सम्बंध इंसानी अक्ल के साथ है जो चतुराई की तरफ ले जाता है और खुदी को मजबूत करता है। दिल का सम्बंध अनुभव के साथ है, दिल **प्रेम** और भक्ति की उत्पति की जगह है। परमार्थ में दिमाग से ज्यादा जरूरी दिल है दिमाग केवल रोशनी का

कारण है और दिल में आत्मिक बल पैदा होता है। दिमाग सांसारिक फैलाव का कारण है लेकिन प्रेम इससे पल्ला छुड़ाता है। अक्ल एक तरह की दिमागी कसरत है जिसका नतीजा अहंकार, क्रोध, भ्रम और घृणा है। **प्रेम** सच्ची मौहब्बत का नाम है। परमार्थ में शुद्ध प्रेम का असली काम है। जब दिल शुद्ध हो तो दिलबर उसे फौरन खींच लेता है अगर हमारा प्यार प्रीतम के साथ हो तो वह हमें खींच लेगा।

दुनिया हमारा प्रीतम बनी हुई है। स्त्री और पुत्रों की मौहब्बत ने हमारे दिल को जकड़ रखा है और हम कैदी बने हुए हैं। जो दिल रिश्तेदारों की मौहब्बत, रूपयों का लालच, स्वर्ग आदि की ख्वाहिशों में जकड़ा हुआ है और दिन-रात दुनियावी पदार्थों का ख्याल करता है वह इस हालत में रब को कैसे पा सकता है? जब तक सांसारिक मैलों की मिट्टी दिल से न उतरे वह प्रीतम हमें कैसे खींचेगा?

संसार में रहते हुए रिश्तेदारों, दोस्तों, स्त्री और बच्चों को सारे पदार्थ दे दें लेकिन दिल किसी को न दें क्योंकि दिल तो मालिक की अमानत है; अमानत में खयानत न करे। दिल सच्चे दिलबर के लिए रखें बाकी सब कुछ बाँट दें। **प्रेम** एक आलौकिक मस्ती है दुनिया के अक्लमंदो को इसकी कोई खबर नहीं। इंसानी अक्ल हद अंदर है यह दुनिया और उसके कामकाजों से परे कुछ नहीं देख सकती। सच्चे प्रेम की रसाई इससे दूर है। जो इन हदों को पार कर जाता है वह जो कुछ देखता है अक्ल उसे सपने में भी नहीं देख सकती।

आम इंसानी अक्ल कहती है कि इस जिस्म और जिस्मानियत के ऊपर फनाह ही फनाह है, वहाँ दुखों के काँटे हैं इसलिए भूलकर भी उस पर पैर मत रखना। ईश्क कहता है अगर काँटे हैं तो उनके साथ अमर जीवन और फूल भी हैं अर्थात इस जीवन से परे होकर एक नई जिंदगी को पाएगा जो सदा का जीवन है इसलिए जाहरी फनाह होने के काँटों से मत डर। इंसानी अक्लभरी चतुराई मालिक के रास्ते में रूकावट है इसकी बन्दिश से आजाद हो फिर तेरा रास्ता साफ है। अक्ल चाहे

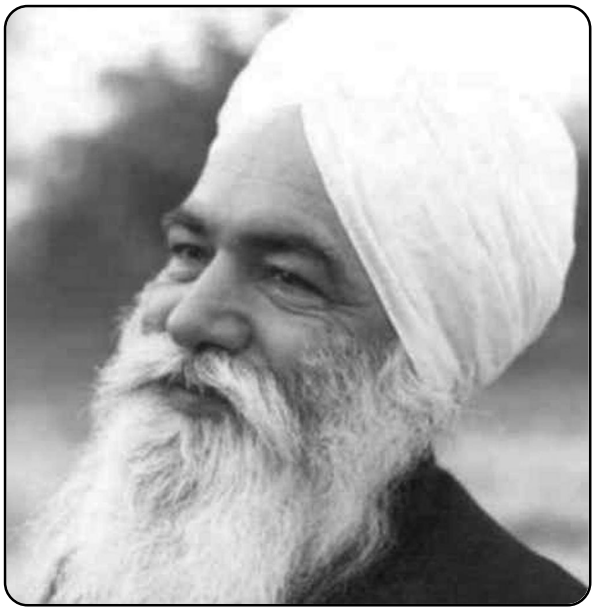

सुंदर दिखती है पर इसकी बन्दिशे दिल को मोहने वाली हैं पर रूह या जान ऊपर एक खास पर्दे की तरह हैं।

परमार्थ का राह गुप्त है। इस गुच्छी को अक्ल से नहीं सुलझाया जा सकता। जब जान और दिल को चंचल मन के हाथों छुड़ाएंगे तो हक का रास्ता हमारे ऊपर जाहिर हो जाएगा। जो मालिक के आशिकों का बंदा बना वह सच्चे अर्थों में बड़े सितारे वाला बादशाह है इसलिए तू चुप हो जा मुँह को सीपी की तरह बंद करके रख नहीं तो यही जुबान तेरी जान की दुश्मन बन जाएगी। जब **प्रेम** के भेद को पाकर पागल हो जाएगा तो उसके सौ दावों को जानकर सौदाई हो जाएगा फिर इंसान को अक्ल और होशियारी की क्या जरूरत है?

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''तू दीवाना हो जा ताकि दूसरे लोग तेरा फिक्र करें। इंसानी अक्ल जितनी ज्यादा होगी उतनी ही दुनिया के फिक्र ज्यादा सताएंगे। ईश्क की दीवानगी से बेहतर और कोई ईलाज नहीं। बहुत लोग अपनी महदूद अक्ल के कारण प्रीतम से बेमुख होते देखे गए हैं। क्या आपने कभी किसी को दीवानगी के कारण काफिर होते देखा है? दीवानगी के कारण रंज का तन पतला और कमजोर पड़ जाता है जो गमों के मारे उजाड़ों में भाग-भागकर जाते हैं; वे दीवानगी का प्याला पीकर दुनिया में बेफिक्र होकर रह सकते हैं।''

शेष अगले अंक में.....

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 6 से 10 जनवरी 2010 तक नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग, (नजदीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई - 400 067
फोन 022-325 14 195, 93246 51 321